कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या.... 3630360

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) -

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ---

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय इतिहास

परीक्षा का दिन मंगलवार

दिनांक 17 मार्च, 2020

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ ; 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ....संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 167/2020

Previous Pathshala

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर / अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम / अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका / ग्राफ / मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि / अन्तर / विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

Previous Pathshala

अंक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

प्र०-1

उ०-1 'त्रिपिटक' बौद्ध धर्म से सम्बंधित ग्रन्थ है।

प्र०-2

उ०-2 विजयनगर की स्थापना हरिहर प्रथम व बुक्का प्रथम के द्वारा 1336 ई. मे की गई।

प्र०-3

उ०-3 प्रसिद्ध कवि अश्वघोष कनिष्क के दरबार मे रहते थे।

प्र०-4

उ०-4 सिकन्दर व पोरस के मध्य 'झेलम' नदी के किनारे हुआ था।

प्र०-5

उ०-5 कनिष्क के शासनकाल में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ।

प्र०-6

उ०-6 'मिलिन्दपन्हो' के अनुसार मिनान्डर 'बौद्ध धर्म' का अनुयायी बन गया था।

प्र०-7

उ०-7 अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 ई. में चित्तौड़ पर अधिकार किया था।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०-9

उ०-9 महाराणा प्रताप की तरह राव चन्द्रसेन ने वीरता दिखाते हुए अपनी रियासत मारवाड़ के लिए अकबर से संघर्ष किया, इसलिए उसे 'मारवाड़ का प्रताप' कहा जाता है।

प्र०-10

उ०-10 मुस्लिम शासकों पर विजय के कारण राणा कुम्भा को 'हिन्दू सुरत्राण' कहा जाता है।

प्र०-8

उ०-8 महाराणा प्रताप का जन्म (9 मई, 1540) कुम्भलगढ़ दुर्ग में हुआ।
खण्ड - ब

प्र०-11

उ०-11 चाणक्य के 'अर्थशास्त्र' से मौर्य साम्राज्य के तात्कालिक राजप्रबन्ध, अर्थव्यवस्था की जानकारी मिलती है। चाणक्य के अर्थशास्त्र में आख्यान, इतिवृत्त, उदाहरण, अर्थशास्त्र सम्मिलित हैं। मौर्य साम्राज्य की तात्कालीन जानकारी ही इसकी विषय-वस्तु है।

प्र०-12

उ०-12 सिंधु - सरस्वती सभ्यता के नगर नियोजन

Previous Pathshala

	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं, जो स्वच्छता के लिए आज भी प्रासंगिक हैं।
	1	जल निकासी के लिए उचित व्यवस्था व नालियों का निर्माण
	2	नालियों के बीच शोषगर्त बने हुए थे जो कचरा निकालने के लिए बनाये गये थे।
	प्र० -13 / उ० -13	सम्राट हर्षवर्धन एक धार्मिक सहिष्णु शासक था। हर्ष ने 605 ई. में कन्नौज व प्रयाग महामोक्ष परिषद् का आयोजन किया व खुलकर लोगों को दान दिया।
	प्र०-14 / उ०-14	यूनानी आक्रमण से पूर्व भारतीयों के सिक्के तकनीकी दृष्टि से कम श्रेष्ठ थे। इण्डो-ग्रीक शासकों ने ऐसे सिक्के चलाएँ जिन पर राजा का नाम व उपाधि अंकित होती थी। इस तरह हम कह सकते हैं कि यूनानी आक्रमण ने मुद्रा (सिक्के) के क्षेत्र को प्रभावित किया।
	प्र०-15 / उ०-15	यदि मैं हम्मीर चौहान के स्थान पर होता, तो रणथम्भौर दुर्ग की रक्षा के लिए

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

निम्नलिखित प्रयास करता -

(1) अलाउद्दीन खिलजी के खिलाफ एक विशाल सेना का संगठन करता व दुर्गो की रक्षा करता

(2) रणमल व रतिपाल जैसे विश्वासघात सैनिकों को सजा देना ।

(3) पड़ोसी राज्यों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को बढ़ावा देना ।

प्र०-16

उ०-16 कई इतिहासकारों ने सन् 1857 की क्रांति को 'जन क्रांति' की संज्ञा दी, क्योंकि इस क्रांति में आम जनता ने बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाई व अंग्रेजों का विरोध किया ।

प्र०-17

उ०-17 बंगाल का विभाजन 16 अक्टूबर, 1905 को वायसराय लार्ड कर्जन के समय हुआ था । लार्ड कर्जन ने बंगाल को पूर्वी बंगाल व बंगाल में विभाजित कर दिया ।

प्र०-18

उ०-18 विजयसिंह पथिक का मूल नाम 'भूप सिंह'

Previous Pathshala

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

था । उन्होंने मुख्य रूप से बिजोलिया किसान आंदोलन का नेतृत्व किया ।

खण्ड - स

प्र० -19

Q0-19

प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान उन्नत अवस्था में था । जिस चिकित्सा पद्धति को हम जानते हैं और जो वर्तमान में सर्वाधिक प्रसिद्ध है वह है आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति । यह प्राचीन भारत की देन है। ऋग्वेद में एक 'भिषक' का नाम आया है, जो चिकित्सक के लिए आया है। एक भिषक को पैर की टूटी हुई हड्डी जोड़ते हुए दिखाया गया है। एक अच्छे वैद्य के 6 लक्षण बताएँ गए है - शिक्षा, वितर्क, विज्ञान, स्मृति, तत्परता व क्रिया । चरक, सुश्रुत व धनवन्तरि प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्री थे । ब्रह्म ने चिकित्सा शास्त्र का ज्ञान दक्ष व भास्कर को दिया था । वेद के तीन विषय हैं - ईश्वर, आत्मा, प्रकृति। ऋग्वेद के सूक्त में वर्णन है कि जहर का उपचार जहर से होता है। ब्रह्मगुप्त प्रसिद्ध चिकित्सा शास्त्री थी । प्राचीन समय में त्रिदोष सिद्धान्त व त्रिधातु सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ । इस तरह हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान उन्नत अवस्था में था ।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०-2
उ०-20

अशोक ने धम्म के प्रतिपादन हेतु अनेक व्यावहारिक उपाय किए, जो निम्नलिखित हैं -

(1) अशोक ने प्रतिवेदकों की नियुक्ति की जो हर समय जनता के दुःख-दर्द की खबर अशोक को देते थे।

(2) अशोक ने धम्म महामात्र पद का सृजन किया व धम्म महामात्रों को उनके कार्य सौंपे। धम्म महामात्र अकारण दण्डितों की व पीड़ितों की सहायता करते।

(3) अशोक ने जनता के कल्याण के लिए सराय, कुओं का निर्माण कराया।

(4) अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए धम्म महामात्रों को विदेश भेजा।

(5) अशोक ने समान नागरिक संहिता व दण्ड संहिता लागू की।

(6) अशोक ने दण्ड नीति को उदार बनाकर व बंदियों को खानों में लगा दिया।

इस तरह हम कह सकते हैं कि अशोक ने धम्म के प्रतिपादन हेतु व्यावहारिक उपाय किए।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	प्र० 21 उ०-21	रुद्रदमन के जूनागढ़ अभिलेख से हमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती है -
	1	जूनागढ़ अभिलेख से हमें रुद्रदामन के शासन प्रबन्ध के बारे में जानकारी मिलती हैं। उसका शासन प्रांतों में विभाजित था।
	2	जूनागढ़ अभिलेख में से उसके जनकल्याण के विषय में जानकारी मिलती हैं। उसने सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार करवाया था। यह कार्य उसके गवर्नर सुविशाखा ने किया था।
	3	जूनागढ़ अभिलेख से हमें जानकारी मिलती हैं कि रुद्रदमन ने संस्कृत को बढ़ावा दिया था।
	(4)	जूनागढ़ अभिलेख से उसके शासन प्रबन्ध, साम्राज्य विस्तार की जानकारी मिलती हैं।
	(5)	जूनागढ़ अभिलेख से रुद्रदामन के व्यक्तित्व के बारे में जानकारी मिलती हैं।
	प्र० 22 उ०-22	तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

की पराजय के कारण निम्नलिखित थे -

(1) पृथ्वीराज चौहान एक विजेता था किन्तु उसमें कूटनीति का अभाव था।

(2) तराइन के द्वितीय युद्ध से पहले शत्रु के संधि प्रस्ताव में फँस गया व युद्ध की तैयारी नहीं की।

(3) जब मुहम्मद गौरी ने गुजरात पर आक्रमण किया, तो पृथ्वीराज चौहान ने गुजरात का साथ नहीं दिया।

(4) तराइन के प्रथम युद्ध में भागती हुई तुर्क सेना का पीछा नहीं किया।

(5) संयोगिता से विवाह के बाद वह विलासिता में डूब गया व राज प्रबन्ध पर ध्यान नहीं दिया।

(6) मौहम्मद गौरी एक महत्वकांक्षी व कूटनीतिज्ञ था।

(7) पृथ्वीराज चौहान ने पड़ौसी राज्यों से शत्रुता कर अपने शत्रुओं की संख्या बढ़ा ली। युद्ध के समय इन

Previous Pathshala

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

राज्यों ने पृथ्वीराज चौहान का साथ नहीं दिया।

उपर्युक्त कारणों से पृथ्वीराज चौहान तराइन के द्वितीय युद्ध (1192 ई.) में हार गया।

प्र० -23
उ०-23 हम निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर कह सकते हैं कि प्लासी की विजय (23 जून 1757) वीरता का नहीं बल्कि विश्वासघात एवं षड़यंत्र का परिणाम थी :-

(1) लार्ड क्लाइव ने नवाब सिराजुद्दौला के सहयोगियों को लालच देकर अपनी ओर मिला लिया।

(2) मीर जाफर को सत्ता का लालच देकर उसे अपनी ओर मिला लिया।

(3) जब 23 जून, 1757 को प्लासी का युद्ध हुआ, तो अंग्रेजों के पास कम सेना थी, जबकि नवाब सिराजुद्दौला के पास अधिक सैनिक थे। लेकिन अंग्रेजों ने नवाब के सहयोगियों को अपनी ओर मिला लिया। इस कारण नवाब की सेना निष्क्रिय रही।

(4) अंग्रेजों ने धोखे से नवाब को मार दिया व

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इस युद्ध में विजय हासिल किया।

इस तरह अंग्रेजों ने नवाब को धोखे से हराया और युद्ध जीता।

प्र. 25
30-25

राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्म समाज' के माध्यम से सामाजिक कार्य किए। इनके सामाजिक सुधार निम्नलिखित है:-

(1) इन्होंने समाज में व्याप्त बाल विवाह, बहुविवाह आदि कुरीतियों का विरोध किया वर्तमान समाज में अभी भी ये कुरीतियाँ विद्यमान है, इसकी दृष्टि से इनके सामाजिक सुधार प्रासंगिक है।

(2) राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का विरोध किया व इसे 1829 ई. में गैर कानूनी घोषित किया। वर्तमान में भी कई जगह यह प्रथा देखी जा सकती है, इस दृष्टि से उनका समाज सुधार प्रासंगिक है।

(3) राजा राममोहन राय ने स्त्री शिक्षा के उत्थान के लिए कार्य किया।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

और अनेक विद्यालयों की स्थापना की व बालिका शिक्षा को बढ़ावा दिया।
वर्तमान समय से गाँवों में स्त्री शिक्षा का प्रसार कम है इसलिए इस दृष्टि से उनके समाज सुधार प्रासंगिक हैं।

(4) इन्होंने मूर्तिपूजा व अंधविश्वास का विरोध किया। ये समस्याएँ अब भी विद्यमान हैं।

राजा राममोहन राय ने समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध किया। ये कुरीतियाँ अब भी विद्यमान हैं। इनके उन्मूलन के लिए इनके सामाजिक सुधार वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं।

प्र० 24

30-24 सन् 1857 की क्रांति सम्पूर्ण भारत में शुरू हुई थी। सभी वर्गों के लोगों ने अंग्रेजों का विरोध किया, फिर भी यह क्रांति सफल नहीं हुई। उसके अनेक कारण थे, जिनमें से एक कारण है भारतीय नरेशों का असहयोग। भारतीय रियासत के राजाओं ने क्रांतिकारियों को

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सहयोग नहीं दिया। इसके विपरीत इन नरेशों ने अंग्रेजों को सहायता प्रदान की। 1857 की क्रांति में भारतीय राजाओं ने बांध का कार्य किया। इन शासकों ने अंग्रेजों को सैनिक सहायता दी व क्रांति की सूचना दी। इन राजाओं ने क्रांति में ऐसा कार्य किया, जिससे अंग्रेजों ने इनके प्रति अपनी नीति परिवर्तित की। इन शासकों ने 'तूफान में बांध' का कार्य किया।

इस तरह हम कह सकते हैं कि भारतीय नरेशों के असहयोग के कारण 1857 की क्रांति असफल हुई।

प्र० 27

उ० 27 हमारे विचार से जनजातियों के सामाजिक उत्थान हेतु निम्नलिखित प्रयास किए जाने चाहिए :-

(1) जनजातियाँ सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी हुई होती हैं। इनके लिए हमें जनजातियों के सामाजिक उत्थान पर बल देना चाहिए।

(2) जनजातियों को सभी प्रकार की सुविधाएँ देनी चाहिए, जिनमें खान - पान, रहन -

Previous Pathshala

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सहन प्रमुख है।

(3) जनजातियाँ शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ी हुई होती हैं, इसलिए इनके लिए शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने चाहिए।

(4) जनजातियों को आधुनिकता से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

(5) इन्हें चिकित्सा व परिवहन की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए।

(6) इनमें व्याप्त बुरी आदतों व अंधविश्वास से दूर करना चाहिए।

प्र० -26 / उ० -26 अर्जुनलाल सेठी का क्रांतिकारी गतिविधियों में योगदान -

प्रारम्भिक जीवन :- इनका जन्म जयपुर में हुआ था। ये स्वाभिमानी थे। इन्होंने वर्धमान विद्यापीठ की स्थापना की। जैन शिक्षा सोसायटी की स्थापना की।

क्रांतिकारी गतिविधियाँ - जयपुर में क्रांति करने

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

का श्रेय सेठजी को ही दिया जाता है। आरा हत्याकाण्ड के मुख्य आरोपी जोरावरसिंह बारहठ इन्हीं के शिष्य थे। इसके पीछे रूपरेखा सेठजी की थी। हार्डिंग्स हत्याकाण्ड के पीछे रूपरेखा इन्हीं की थी।

कांग्रेस की सूरत अधिवेशन - इन्होंने 1907 की कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया था।

जब इन्हें जयपुर राज्य में नौकरी दी जा रही थी, तब इन्होंने कहा "श्रीमान अर्जुनलाल नौकरी करेगा, तो अंग्रेजों को देश से बाहर कौन निकालेगा।

इनके द्वारा स्थापित वर्धमान शिक्षा केंद्र क्रांतिकारियों की गतिविधियों का केंद्र था।

सन् 1857 की क्रांति में इनका योगदान अविस्मरणीय है।

Previous Pathshala

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - द

प्र० -28 / उ० -28

चौलकालीन कला व साहित्य :-

चौलकालीन कला - चौल शासक शैव धर्मानुयायी थे तथापि इन्होंने वैष्णवों के मंदिर का भी निर्माण किया।

1 स्थापत्य कला - चौल शासकों ने मंदिर, राजप्रसाद, विस्तीर्ण बांध, झीलों का निर्माण कराया व अपने कला प्रेम का परिचय दिया।

(i) मंदिर - चौल कला की मुख्य देन मंदिर हैं। इनके मंदिरों की विशेषताएँ - आधार पीठिका, अलंकृत गोपुरम, पारम्परिक सिंह बैकेट व संयुक्त स्तम्भों का प्रयोग हैं।

प्रमुख :-

(A) तंजौर का राजराजेश्वर मंदिर - चौल शासक राजराजेश्वर ने इसका निर्माण कराया। इसकी लम्बाई 160 मी. व चौ. 80 मी. है। मंदिर का सबसे आकर्षक भाग है पिरामिडाकार ध्वज जो 3.50 मी. चौड़ा है। पर्सी ब्राउन ने इस मंदिर के ध्वज को "भारतीय मूर्तिकला का निकष माना है।"

(B) गंगैकोण्डचोलपुरम् का मंदिर - राजेन्द्र प्रथम ने इसका निर्माण कराया था। इसमें गोपुरम

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कला की पूर्ण परिणति हुई है। जटिल अलंकृत इसकी विशेषता है।

(c) कोरंगनाथ का मंदिर
(D) तिरुकट्टलाई का चोलेश्वर मंदिर
(E) नरतमलाई का विजयालय मंदिर
(F) त्रिभुवनेश्वर मंदिर आदि।

(2) मूर्तिकला - शैव देवताओं की मूर्तियाँ अधिक बनाई गई। शिव, पार्वती, गणेश आदि की मूर्तियाँ प्रमुख हैं। चोल शासकों की भी मूर्तियाँ बनाई गई, जो उच्च कोटि की थी। शिव की कांस्य मूर्ति प्रसिद्ध है।

(3) चित्रकला - अजन्ता से प्रभावित चित्रकारी की गई। तंजाकुर इसका उदाहरण है। राजराजेश्वर मंदिर की दिवारों पर चित्रकारी की गई जो बहुत प्रसिद्ध है।

चोलकालीन साहित्य :-

चोल काल में साहित्य में पर्याप्त उन्नति हुई। चोल शासकों ने साहित्यकारों को संरक्षण दिया। कम्बन ने रामावतार ग्रन्थ की रचना की, यह कुलोत्तुंग III के दरबार में रहता था। इसके काल को तमिल साहित्य का स्वर्णकाल

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कहा जाता है। जयन्गोंडार ने 'कलिंगुत्तु परणी' ग्रन्थ की रचना की। यह कुलोतुंग I के दरबार में रहता था। शक्किलार ने पेरियापुराणम् की रचना की। शेखर ने तिरुक्टोइड्पुर्णम् की रचना की। नंदी ने नरतमलाई की रचना की। रामानुजाचार्य, ऋग्वेद आदि पर संस्कृत में ग्रन्थों की रचना की। जैन ग्रन्थों की भी पर्याप्त मात्रा में रचना की। संस्कृत. तमिल भाषा की पर्याप्त उन्नति हुई।

इस तरह हम कह सकते हैं कि चोल काल में कला व साहित्य की पर्याप्त उन्नति हुई।

प्र० 29 / उ-29

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गाँधी का योगदान :-

प्रारम्भिक जीवन :-

गाँधीजी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई. को हुआ था। इनके पिता का नाम करमचन्द गाँधी व माता का नाम पुतली बाई था। भारत में इनका पहला सत्याग्रह चम्पारण में था। इन्होंने भारत को स्वतन्त्र कराने का अथक प्रयास किया। इनकी हत्या 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे ने की थी।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान :-

(1) असहयोग आंदोलन :-

गाँधीजी ने 1 अगस्त 1920 ई. में यह आंदोलन चलाया।

असहयोग आंदोलन चलाने के कारण :-

ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीति

(i) रौलेट एक्ट

(ii) जलियाँवाला बाग हत्याकांड

(iii) आर्थिक संकट

(iv) इन कारणों से गाँधीजी ने यह आंदोलन चलाया। गाँधीजी ने इस आंदोलन के कार्यक्रम रखे। जिसे विदेशी कपड़ों का बहिष्कार, सरकारी नौकरी का बहिष्कार आदि। रचनात्मक कार्यक्रमों में स्वदेशी कपड़ों का प्रयोग, स्वदेशी विद्यालयों की स्थापना आदि थे। गाँधीजी ने कहा कि " यदि इन कार्यक्रमों को सही तरीकों से लागू किया गया, तो एक वर्ष में स्वराज्य प्राप्त हो जाएगा। गाँधीजी ने चौरी - चौरा (5 फरवरी 1922) काण्ड के कारण असहयोग आंदोलन बन्द कर दिया। यह आंदोलन स्वराज्य दिलाने में सफल नहीं हुआ। लेकिन रचनात्मक कार्यों में सफलता मिली।

(2) सविनय अवज्ञा आंदोलन :-

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

गाँधीजी द्वारा यह आंदोलन शुरू करने के कारण निम्न थे :-

(i) साइमन कमीशन की रिपोर्ट से निराशा
(ii) नेहरू रिपोर्ट को स्वीकार न करना।
(iii) गाँधीजी की माँगों की उपेक्षा
(iv) ब्रिटिश सरकार का दमनचक्र

गाँधीजी द्वारा नमक कानून तोड़ना :-

गाँधीजी ने 6 मार्च 1930 को अपने 78 सदस्यों के साथ दांडी यात्रा शुरू की। गाँधीजी ने दांडी पहुँचकर नमक कानून तोड़ा व सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया।

कार्यक्रम :-

(i) विदेशी वस्तुओं की होली जलाना
(ii) विद्यार्थियों का सहयोग
(iii) महिलाओं द्वारा अफीम की दुकान पर धरना देना।

गाँधी - इर्विन समझौता - 5 मार्च 1931 को हुआ।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन - गाँधीजी ने दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया पर कोई लाभ नहीं हुआ।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) भारत छोड़ो आंदोलन :-
गाँधीजी ने 8 अगस्त 1942 को यह आंदोलन शुरू किया।
इसे शुरू करने के निम्न कारण थे :-
(i) ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीति
(ii) अगस्त प्रस्ताव
(iii) क्रिप्स मिशन की असफलता
(iv) जापानी आक्रमण का भय

गाँधीजी ने काँग्रेस के वर्धा अधिवेशन में इस का आंदोलन का प्रस्ताव पास करवाया।
गाँधीजी ने इस आंदोलन में "करो या मरो" का नारा दिया।

इसका आंदोलन का विशेष महत्त्व है :-
(1) अब अंग्रेज समझ गये कि वे अब भारत में नहीं रह सकते
(2) भारत में स्वतन्त्रता की अलख तेज हो गयी।

इस तरह गाँधीजी ने आंदोलन में जो योगदान दिया, वह भारतीय राष्ट्रीय अविस्मरणीय है।

पृ०-30 प्रश्न संख्या 30 का उत्तर मानचित्र में है।

उत्तर - 30

7

नामांक Roll No.

SS-13-Hist.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2020

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2020

इतिहास

HISTORY

Outline Map of INDIA

Hist.

Previous Pathshala